ॐ सत्नाम साक्षी

सद्‌गुरु टेऊँराम चालीसा

भगवत कृपा धार के,
दर्शन दीना आज।

बाल रूप बन मात के,
पूरन कीने काज।।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊँराम।।
तप्त धरा मरुदेश में, मेघ देत सन्देश।
त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष।।

माता कृष्णा हृदय में, फूली नाहिं समाय।
संत जनो की प्रेम से, सेवा रही कमाय।।

सिन्धु देश की महिमा भारी,
बार बार ऋग्वेद उच्चारी
सिन्धु तीर पावन प्रसंगा,
बहती जहां ज्ञान की गंगा
ऋषी मुनी अरु ज्ञानी ध्यानी,
पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी
धन्य सिन्ध की धरती सारी,
धन्य सिन्ध के नर अरु नारी

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारत।
अभ्युत्थानमर्धमस्य तदाऽऽत्मनं सृजाम्यहम ॥

समय बड़ा प्रबल प्रवीना,
वेद पुराणनि वर्णन कीना
काल चक्र दुस्तर अति भारा,
आ अधर्म ने पांव पसारा
धर्म कर्म भूले नर नारी,
पाप कर्म में वृत्ती धारी
गीता में श्री कृष्ण सुनाया,
जब जब भार भूमि पर आया

निर्गुण पूर्ण पारब्रह्म,
जो सत्‌चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

तब तब ही अवतार धरूं मैं,
सत्य धर्म की विजय करूं मैं
प्रण पालन हित ले अवतारा,
आए खण्डू नगर मंझारा
चेलाराम के आंगन माहीं,
खुशी भई सब के मन माहीं
कृष्णा मां को दरश दिखाया,
चतुर्भुजी निज रूप पसाया

माता कृष्णा प्रात उठ,
चक्की रही चलाय।
बालक को निज ज्ञान की,
लोरी रही सुनाय।।

शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े,
प्रकट भए सब काज संवारे
शनिवार का दिवस सुहाना,
शशिसम चमकत रूप जहाना
लोली दे दे मात लुडावे,
गद् गद् गीत कण्ठ से गावे
बालक वय से हरिगुन माहीं,
प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं

सद्गुरु के युग चरण की,
सेवा कर निष्काम।
स्वामी आसूराम से,
मंत्र लिया सुखधाम।।

विद्या हेतु जब उन्हें पठाया,
सतगुरु आसूराम तहं पाया
गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम,
परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुम
बैठ एकान्त में ध्यान लगाया,
सहज समाधि के सुख को पाया
खान पान जग विषयों माहीं,
रंचक मन कहं लागत नाहीं

जितनी विद्या जगत की,
सो सब अविद्या रूप।
तांको तज इक ओम का,
स्मरण करो अनूप।।

लगन लगी गुरु शब्द मंझारी,
टूटी मोह कोह की जारी
बालक गण को साथ बिठाये,
राम नाम की धुनी लगाए
इक दिन सिन्धू नदी किनारे,
बालक गए नहाने सारे
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हा,
टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हा

बालक जल में खेलन लागे,
खिल्लू था उन सब में आगे
खेलत खेलत खिल्लू डूबा,
सबने देखा बड़ा अजूबा
वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं,
कूदे लुप्त भए फिर ताहीं
बालक भय से रोअन लागे,
समाचार देवन कुछ भागे

खण्डू जल से गिर गया,
विकल भये नर-नार।।
वरूण देव से विनय कर,
सत्गुरु लिया उबार।।

शोकाकुल आये नर नारी,
चमत्कार देखा इक भारी
खिल्लू अपनी गोद उठाये,
सतगुरु जी तब बाहर आये
अद्भुत ऐसा देख निजारा,
विस्मित भया नगर तब सारा
खिल्लू कहा सुनो हे भाई,
डूब गया जब मैं जल माहीं

खिल्लू को जब ले चली,
प्रबल सिन्धु की धार।

सत्गुरु टेऊँराम ने
तत्क्षण लिया उबार।।

सुन्दर देव वहां दो आए,
पकड़ा मुझे,वरुण ढिग लाए
इतने में टेऊँराम पधारे,
तांको देख प्रसन्न भए सारे
अभिवादन वरुण तब कीन्हा,
निज सम्मुख ही आसन दीन्हा
कहन लगे कुछ सेवा बताएं,
बोले खिल्लू लेन हम आए

मजदूरी करके लिया,
इकतारे का साज।
भूल न किससे मांगिये,
कैसा भी हो काज।।

प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई,
सद्‌गुरु ने मम जान बचाई
धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा,
परम पवित्र तुम्हरा नामा
जय हो हे गुरुदेव तुम्हारी,
सुख सागर तुम अति हितकारी
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं,
लेवत नाम पाप त्यों भागहिं

इक बुढ़िया के द्वार पर,
पड्यो देख मृत श्वान।
छाड़्यो जा दरियाह में,
सब में लख भगवान।।

तम बुझावत हैं चन्द ज्यों,
शीत हृदय करत नाम त्यों
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे,
नाम सुमरते सब फल सेवे
अब तो सत्संग की धुनि लागी,
मन की माया ममता त्यागी
डंडा झांझ लिया यकतारा,
बाजा तबला साज प्यारा

भगवत की कृपा भई, संत पधारे धाम।
भये प्रफुल्लित हृदय में, सद्गुरु टेऊँराम।

जेते सुख संसार के, तेते सेवा माहिं।
भोजन पावें संत जन, आप जिमावे ताहिं।।

गली गली में धूम मचाई,
कृष्ण जैसे रास रचाई
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं,
गुरु सोचा यहाँ रहना नाहीं
नाम कीर्ती जय जयकारा,
इन बातों से सन्त न्यारा
यह विचार कर बिना बताए,
जंगल में कुछ दिवस बिताए

निज कर कुटी बनायली, कीनी तपस्या घोर।
भान नहीं कुछ समय का, सांझ भयी या भोर।।

आसन वहां जमाया स्थिर,
हिंसक जन्तू का था ना डर
खोज खोज प्रेमी वहाँ आए,
लौट चलें सबने समझाए

थिर आसन निश्चल मन ठाना,
कहा अभी फिर लौट न जाना
घास फूस तृण कुटी बनाई,
कन्द मूल खा जान सुखाई

भजन सार संसार में,
जब उपजा मन ज्ञान।
शहर छोड़ एकान्त में,
करने लगे हरि ध्यान।।

गुरुमन्त्र का कर अभ्यासा,
मेट दई जम की सब त्रासा
आतम अन्तर वृती लागी,
जगत वासना सकली भागी
पावन भूमी वह जग माहीं,
हरिजन करत तपस्या जाहीं
तिस भूमी की रज सिर लावत,
गिरिजा को कह शंभु सुनावत

अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत आलीशान।

जांका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

तीर्थ सम वह पूजन जोगी,
जहं जहं नाम जपत है योगी
धन्य धन्य है सो अस्थाना,
अमरापुर है उसका नामा
अमरापुर स्थान अमर है,
दर्श करे सो फेर न मर है
चार धाम सम पवित्र धामा,
अमरापुर है उसका नामा

माया आई मोहने, धार मोहनी रूप।
जान लिया गुरदेव ने, महिमा अमित अनूप।।

तांकी महिमा कही न जाई,
शेष शारदा पार न पाई
बैठ जहां गुरु ज्ञान सुनाया,
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया,
सोए जीवों को था जगाया
जब तक गंग यमुन का पानी,
तब तक अमर रहेगी कहानी
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं,
नाम प्रकट जग में तव तौं लौं

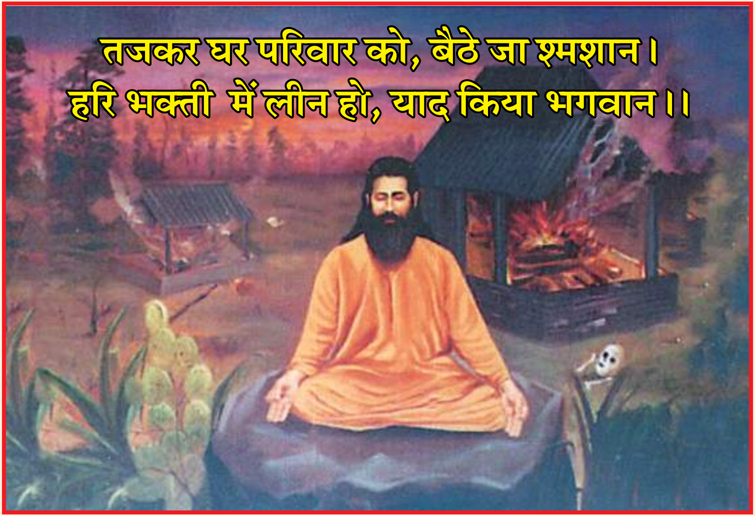
तजकर घर परिवार को, बैठे जा श्मशान।
हरि भक्ती में लीन हो, याद किया भगवान।।

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान।।
आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरनागत भी अमर, धन गुरु टेऊँराम।
साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम।
स्वासों में पर रम रहे, सत्‌गुरु टेऊँराम।।
चालीसा गुरुदेव की, पढ़े सुने जन जोय।
श्रद्धा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय।।

लक्ष्मी नारायण खड़े, धर अंग्रेजी भेष।
किसने आग लगाई है, कहो हमें दरवेश।।

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम।। ॐ ।।
जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।। स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।। ॐ ।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम।। स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।। ॐ ।।
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश।। स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।। ॐ ।।

कूप नीर जब चुक गया,
भक्तनि करि पुकार।

सद्गुरु छीन्टा मार तब,
कीनी जय-जय कार।

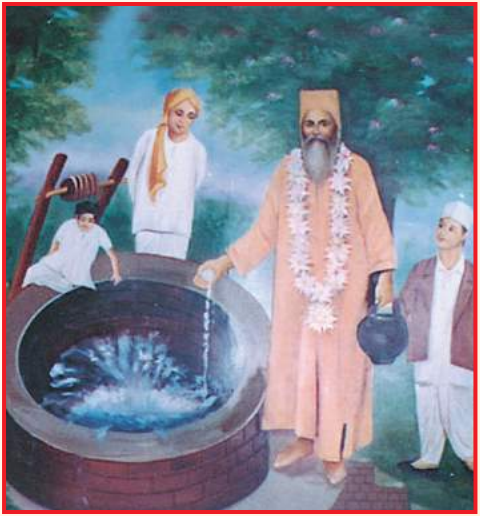

पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे।। स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे।। ॐ ।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती।। स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती।। ॐ ।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।। स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।। ॐ ।।
सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे।। स्वामी।।
अंत न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।। ॐ ।।
जो जन तुम्हरी आरति गावे, पावे सो मुक्ती।। स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ती।। ॐ ।।

मैं निकस्यो अपने घर सों, इक द्वार खड़ी बुढ़िया महतारी।
जो मृत श्वान के काज हरीजन, सों विनती करके थकहारी।।
मांगत दाम हरिजन जो वह दे, नहीं पाय गरीब बेचारी।
मोसों कही हम काढ़ लियो, हरी नाम महातम जानके भरी।।

छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।
रहस्यारामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं, श्री टेऊँराम गुरु ज्ञानी।
चावल चन्दन कुंगूं केसर, फूलों की वरखा बरसाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरति साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ।

सच्चा सौदा नाम का,
झूठा सब व्यवहार।

नाम जपें चलता रहे,
जग का कारोबार।।

पीछे अपना काम कर,
पहिले कर उपकार।
सब का घट भरवाय कर,
तब लीनी जलधार।।

पल्लव

आशवंदी गुर तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाई।
पाइ पल्लउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाई।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नामु सनेही।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुर लोक तीन में, आवागमन मिटाई।

श्री अमरापुर धुनि

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
जय यदुनन्दन जय घनश्याम, कृष्ण मुरारी राधेश्याम।
अन्तर्यामी तेरा नाम, सबको सुमति दे सुखधाम।
अमरापुर के सुन्दर श्याम, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम।
ज्ञान गुरु गोविन्द हरे, सत्गुरु सर्वानन्द हरे।
सत्नाम साक्षी सर्व आधार, जो सुमरे सो उतरे पार।

साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् सत् चित् आनन्द साक्षी शिवोऽहम्
स्वयं प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम् चिद् आकाशी साक्षी शिवोऽहम्
घट घट वासी साक्षी शिवोऽहम् सर्व निवासी साक्षी शिवोऽहम्
प्रेम प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम् अमरापुर वासी साक्षी शिवोऽहम्
कहता टेऊँ साक्षी शिवोऽहम् कहता स्वामी साक्षी शिवोऽहम्

ॐ शांति ! शांति ! ! शांति ! ! !

प्रकाशक

श्री अमरापुर स्थान,

एम. आई. रोड, जयपुर फोन : 0141-2372423, 2372424

website : premprakashpanth.com

e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com